शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी के प्रमुख स्मृति शेष लघुकथाकार और उनकी लघुकथाएँ

अनूप कुमार (शोधार्थी)
राजकीय कला महाविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

मनुष्य की भावनाओं ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप धारण कर लिया है इन भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए साहित्य में लघुकथा एक सशक्त माध्यम है। मानव मन के कुशल चितेरे साहित्यकार लघुकथा में विशाल फलक को समाहित करते हैं। सुख-दुःख के भीतर चलने वाली जीवन के समस्त क्रियाओं को वाणी प्रदान करना साहित्यकार अपना दायित्व समझता है। प्रस्तुत शोध पत्र में ऐसे साहित्यकारों का स्मरण किया गया है, जिन्होंने लघुकथा को न सिर्फ नयी दिशा दी है, बल्कि उसके कलेवर को सजाया-संवारा है।

यह विज्ञान युग के अनुरूप है

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की नवीनतम विधा लघुकथा वर्तमान युग की प्रमुख मांग है। वैसे इसका इतिहास अतिप्राचीन है। दरअसल लघुकथा लेखन का कार्य आदिकाल से किया जा रहा है। कई लघुकथाकार ऐसे हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही लघुकथा लेखन को समर्पित कर दिया। इन्ही में से कुछ लघुकथाकार ऐसे हैं, जो आज हमारे बीच उपस्थित नहीं है किन्तु लघुकथा के प्रति उनका समर्पण, संघर्ष की भावना, नये पथ की तलाश, मनुष्य के संघर्षों में उपजी अंतर्वृत्तियों और मानवीय मनोभावों को उकेरने में वह सफल रहे हैं। जिन्होंने लघुकथा लेखन, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन एवं गोष्ठियों के माध्यम से लघुकथा को एक आयाम दिया। उनमें से कुछ प्रमुख हस्ताक्षरों का यहा उल्लेख किया गया है।

डॉ. सतीश दुबे

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ लघुकथाकार डॉ. सतीश दुबे का जन्म 12 नवम्बर 1940 को मध्यप्रदेश में हुआ था। हिन्दी व समाजशास्त्र विषय से एम.ए. करने के बाद इन्होंने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। मध्यप्रदेश के आदिवासी कल्याण विभाग में व्याख्याता के पद से सेवानिवृत्ति के बाद स्वतन्त्र लेखन से जुड़ गये। इनके प्रमुख एकल लघुकथा संग्रहों में - 'सिसकता उजास' (1974), 'राजा भी लाचार है' (1994), 'भीड़ में खोया आदमी' (1990), 'प्रेक्षागृह' (1997), 'मेरी समकालीन सौ लघुकथाएँ' (2007), 'बून्द से समुद्र तक' (2011), 'इक्कीसवीं सदी की मेरी इक्यावन लघुकथाएँ' (2014), 'ट्वीट' (2015), 'प्रेम के रंग' (2017 मरणोपरान्त) प्रकाशित हुए। जबकि 'प्रतिनिधि लघुकथाएँ' (1975) एवं 'आठवें दशक की लघुकथाएँ' (1979) इनके लघुकथा संकलन हैं। 'सिसकता उजास' (1974) आधुनिक हिन्दी लघुकथा साहित्य का प्रथम एकल लघुकथा संग्रह है। 'ड्रेस का महत्त्व', 'साइबर साहित्य', 'थके पाँवों का सफर', 'पेशे की जात', 'दुआ', 'उनकी याद मे', 'सुहाग के निशान', 'आँखों की जुबान', 'जिन्दगी', 'बजट' एवं 'आखिरी दाँव'

इनकी अन्य प्रमुख लघुकथाएँ। इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार एवं सम्मान दिए गये। डॉ. सतीश दुबे का निधन 25 दिसम्बर 2016 को इन्दौर (मध्यप्रदेश) में हुआ॥

'ड्रेस का महत्त्व' डॉ. सतीश दुबे की प्रथम लघुकथा है। कथा में सामाजिक प्रशासनिक (राजनीतिक) दोगलेपन को व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रशासनिक व्यवस्था में राजनैतिक भय का बने रहना एक सामान्य लिपिक को तबादले के रूप में भुगतना पड़ता है। जब वह खादी की धोती-कुर्ता टोपी आदि पहनकर अफसर के पास दस नम्बर की फाइल लेकर जाता है। सामान्य आदमी को दरकिनार करती अफसर वृत्ति को उजागर करती लघुकथा की निम्न पंक्तियाँ देखिए-

"साहब का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। क्रोधित हो उठे, "बेवकूफ, दूर हो जाओ मेरी निगाह से.... करेंगे क्लर्की और ड्रेस पहनेंगे नेता की। आई से गेट आऊट।"

आगंतुक बाबू के पलटते ही बड़े बाबू को बुलाने के लिए उन्होंने जोरों से घंटी किरकिराई तथा आदेश दिया, नेता टाइप ड्रेस पहनने वाले जितने भी बाबू हों, सबके ट्रांसफर प्रपोजल ले आओ।"[1]

वहीं इनकी 'साइबर साहित्य' लघुकथा में एक दुकानदार खुलेआम अश्लील साहित्य की पुस्तकों का व्यवसाय मात्र धन कमाने के उद्देश्य से करता है। महेन्द्र बाबू ने जब दुकानदार से पूछा तुम्हे ऐसा करने से कोई रोकता नहीं है।

"रोकता है, मुझे ही नहीं आसपास के सब दुकानदारों को पर सौ पचास लेकर रुक जाता है....।"

प्रत्युत्तर सुनकर महेन्द्र बाबू के तुनककर पुस्तकें फेंकते ही दुकानदार आक्रामक तेवर अख्तियार करते हुए बोला- "बाबू साब गरीबों के धंधे की इस धाँधली की तरफ ध्यान देना छोड़कर साइबर कैफों के कैबिनों की उस धाँधली की तरफ ध्यान दीजिए, जहाँ कम्प्यूटर, इन्टरनेट की पोर्न-साइटों पर किशोर-किशोरियाँ ही नहीं सयाने भी, जिसे आप अश्लील कहते हैं उसे देखते, सुनते पढ़ते और ऐश करते हैं... दुकानदारी बिगाड़ने के बजाए बाबू साहब अपना काम कीजिए।"[2] आज की युवा पीढ़ी का अश्लील साहित्य की ओर झुकाव लघुकथा का मूल कथ्य है। साहित्य में अश्लीलता के बहाने मूल्यहीनता प्रवेश कर गयी है।

विक्रम सोनी

लघुकथाकार विक्रम सोनी का जन्म 25 मई, 1943 को बैकुण्ठपुर (मध्यप्रदेश) में हुआ॥ आई.टी.आई प्रशिक्षण कॉलेज - राजनान्दगाँव, छत्तीसगढ़ में अधीक्षक के पद से सेवानिवृत्ति के बाद लेखन कार्य किया। सन् 1989 में इनका एकल लघुकथा संग्रह 'उदाहरण' प्रकाशित हुआ। 'मानचित्र' (1983), 'छोटे-छोटे सबूत' (1984), 'पत्थर से पत्थर तक' (1987) एवं 'लावा' (1987) इनके द्वारा सम्पादित लघुकथा संग्रह हैं।

विक्रम सोनी ने 'लघुआघात' विशुद्ध हिन्दी लघुकथा साहित्यिक त्रैमासिकी पत्रिका का सम्पादन कार्य भी किया। 'मूल्यान्तर', 'मुआवज़ा', 'लाठी', 'भुक्खड़ा', 'बनैले सुअर', 'पेट पर लात', 'बातचीत', 'मीलों लम्बे पेंच', 'अन्तहीन सिलसिला' एवं 'अजगर' इनकी अन्य लघुकथाएँ हैं। 4 जनवरी 2016 को उज्जैन (मध्यप्रदेश) में इनका निधन हुआ॥

"लघुकथा के विकास में 'लघुआघात' पत्रिका और उसके सम्पादक विक्रम सोनी का योगदान ऐतिहासिक है। इन लघुकथाओं में कमजोर वर्ग का हौसला आक्रामक तेवर दिखाता है और एक सधे वाक्य से व्यंग्य का हथौड़ा भी शोषक वर्ग

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पर प्रहार कर ही देता है। पुलिसिया मनोवृत्ति पर यह बेफ्रिक तंज- 'माँग कर ला देना बेटा, भिखारी को जूठन से परहेज नहीं होगा।' पुलिसिया माँग पर यह व्यंग्य लघुकथा की बनावट और संदेश की बदलती दिशा का संकेतक है, 'मूल्यांतर' लघुकथा।"[3]

'बनैले सुअर' नामक लघुकथा आधुनिक युग के जातिवादी व्यवहार का क्रूरतम चित्र प्रस्तुत करती है। यह विक्रम सोनी की श्रेष्ठ लघुकथाकों में से एक है। वहीं 'अन्तहीन सिलसिला' लघुकथा में साधन सम्पन्न वर्ग का साधनहीन वर्ग के प्रति शोषण की कथा का वर्णन है।

मनीषराय यादव

लघुकथाकार मनीषराय यादव का जन्म 14 मई 1945, जामगाँव, जिला मंडला (मध्यप्रदेश) में हुआ। स्नातक तक शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त मध्यप्रदेश सरकार में राज्य स्तरीय प्रशासनिक अधिकारी के पद पर नियुक्त हुए। सन् 1980 में प्रकाशित 'अनावरण' इनका एकल लघुकथा संग्रह है। जबकी 'कथानामा' (1984), 'कथानामा दो' (1985) उक्त दोनों संकलन साहित्यकार बलराम के संयुक्त सम्पादन में प्रकाशित हुए। लघुकथा के लिए समर्पित योद्धा का निधन 27 अक्टूबर, 1993 को भोपाल (मध्यप्रदेश) में हुआ। 'अनावरण', 'टेम्परेरी', 'समय का पाबंद', 'सिफारिश', "परम्परा', 'प्रायश्चित', 'पर-उपदेश', 'दुर्घटना', 'काला धब्बा' एवं 'योजना की गति' इनकी प्रमुख लघुकथाएँ हैं। मनीषराय यादव की लघुकथा 'टेम्परेरी' में राजनेता व कर्मचारी के मध्य स्थाई एवं अस्थाई (टेम्पररी) सम्बंधों को लेकर व्यंग्यात्मक विरोधाभास प्रकट किया गया है। प्रशासनिक अधिकारी द्वारा एक कर्मचारी को नौकरी से निकाल दिए जाने पर जब मंत्री जी ने सवाल किया तो उस अधिकारी ने विनम्रतापूर्वक सहज भाव से उत्तर दिया - "सर वह कर्मचारी भ्रष्ट था, साथ ही टेम्परेरी था, इसलिए निकाल दिया गया।"[4] अधिकारी के शब्द सुनकर मंत्री जी को गुस्सा आ गया और उन्होंने कहा मेरे सामने टेम्परेरी शब्द कहते तुम्हें शर्म नहीं आती है। मंत्री की कुर्सी भी टेम्परेरी होती है जबकी कर्मचारी स्थाई होता है।

"मनीषराय यादव की लघुकथाएँ प्रायः एकांतिक रूप से उनकी प्रशासनिक जीवन यात्रा का असल चेहरा है। कथानक सामान्यतः नितांत लघु, पर आघात गहरा करते हैं। राजनीति के गिरगिटिया चरित्र को अपनी पहली लघुकथा 'अनावरण' में इस तरह पेश किया है कि गिरगिटिया या अध्यक्ष ही गिरगिट प्रतिमा का अनावरण कर गया। प्रशासन में भ्रष्टाचार के सांकेतिक कोड को 'सिफारिश' लघुकथा में, मंत्रियों के कार्यकाल को 'टेम्परेरी' शब्द चिढ़ाने में, धर्म ग्रन्थों की न्यायालयीन कसमों में, भ्रष्टाचार के कुएँ में ईमानदार की फजीहत में, बेरोजगार युवाओं की यंत्रणा में इनका संदेश यथार्थ के प्रशासनिक राजनीतिक अक्स रचता है। लेखक किसी तरह आघात करना चाहता है। 'पर उपदेश' की व्यंग्यात्मक बुनावट में असरदार है। निश्चय ही ये लघुकथाएँ एक खास तेवर, राजनीतिक प्रशासनिक चेहरे की असलियत पर तीखे व्यंग्य से असरदार हैं।"[5]

महेन्द्र सिंह महलान

लघुकथाकार महेन्द्र सिंह महलान का जन्म 7 जनवरी 1949 को सुबाना, (हरियाणा) में हुआ था। राजस्थान शिक्षा विभाग में प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत्ति होने के बाद स्वतन्त्र लेखन का कार्य किया। 'सिलसिला' (1993) इनका एकल लघुकथा संग्रह है। वहीं 'संघर्ष' (1987),

'मंथन' (1989), 'राजस्थान का लघुकथा संसार' (1998) 'राजस्थान की महिला लघुकथाकार' (2004), 'इमारत' (2007) सभी संकलन संयुक्त सम्पादन में प्रकाशित हुए। 'खौफनाक अहसास', 'पहचान', 'युद्ध', 'उस्ताद', 'हालात', 'सम्मान' 'अपराधी', 'बड़ भाग्य', 'देवता', इनकी अन्य लघुकथाएँ हैं। 3 अगस्त 2017 को तिजारा-अलवर (राजस्थान) में इनका निधन हो गया। "महेन्द्र सिंह मलहान मूलतः अध्यापक थे। उन्होंने लगभग आठ लघुकथा संकलनों का सम्पादन किया। लघुकथा प्रतियोगिता भी आयोजित करते रहते थे।

इनका एक ही एकल लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो पाया। प्रस्तुत संकलन में इनकी लघुकथा 'खूँटा' बहुत कुछ कह जाती है। पशु बाँधने की जगह पर लगा खूँटा सिर्फ नाक का सवाल नहीं अपितु लम्बे समय की रंजिश, ईर्ष्या तथा कुण्ठा की उपस्थिति है। जो हिंसा में परिणत होकर गाढ़ने और उखाड़ने वालों को परलोक का रास्ता दिखाती है। दहेज का 'खौफनाक अहसास' सीधे-सादे आदमी को किस कदर जलील करता है। यह बात इस लघुकथा में कही गई है। 'पहचान' और 'धर्म युद्ध' साधारण बुद्धि के प्रश्न उठाती है। इनका कथ्य, शिल्प, विषय आदि भी दोहराय गये हैं। 'हालात' लघुकथा अध्यापक जीवन की विकृतियों की तरफ इशारा करती है। अध्यापक स्वयं निजी हालात बदतर करेगा तो समाज में सम्मान भी नहीं पा सकेगा। विद्यालय के एक प्रसंग को लेकर लेखक ने 'अपराधी' लघुकथा में बताया है कि ईमानदारी नितान्त अकेली तथा असंगठित रहती है जबकी बेईमानी सदैव संगठित रहती है। यहाँ संगठित बेईमानी जीतती है। फिर भ्रष्टाचार के समर्थन में सामाजिक मूल्य गढ़े जाते हैं। इसी तरह 'उस्ताद' में भी शिक्षण संस्थाओं में गिरते अध्यापकीय मूल्यों को दर्शाया गया है।"**6**

जगदीश कश्यप

इनकी लघुकथाओं में वह दृष्टान्तपरक बीज तत्व मौजूद हैं, जो परम्परा से बोध और आदर्श लेकर फलीभूत हुए है। इनकी अधिकांश लघुकथाएँ वास्तविक धरातल पर मूल्यपरकता को संजोय रखती है। 1 दिसम्बर 1949 को गाजियाबाद (उतरप्रदेश) में जन्मे कश्यप हिन्दी लघुकथा परम्परा के अग्रणी लघुकथाकार रहे हैं। 'कोहरे से गुजरते हुए (1998), 'कदम-कदम पर हादसे' (2003), 'नागरिक' (2003) इनकें एकल लघुकथा संग्रह है। 'छोटी-बड़ी बातें' (1978), 'विरासत' (1990) तथा 'बीसवीं सदी की चर्चित हिन्दी लघुकथाएँ (2007 मरणोपरान्त) क्रमशः महावीर जैन, उमाशंकर मिश्र तथा ओमप्रकाश कश्यप के संयुक्त सम्पादन में प्रकाशित हुई इनकी अन्य चर्चित लघुकथाओं में - 'रंभाती गाय', 'पहला उम्मीदवार', 'गृहस्थी, 'नियति', 'युद्ध का गणित', 'पेट का जुगाड़' एवं 'अन्तिम गरीब' प्रमुख हैं। 17 अगस्त, 2004 को गाजियाबाद, (उत्तरप्रदेश) में इनका निधन हो गया।

जगदीश कश्यप की 'गृहस्थी लघुकथा में साधारण जीवन यापन करने वाले एक गरीब पति-पत्नी की कथा का वर्णन सद्गृहस्थ होने का संदेश देती है। पति के सम्मान का सुरक्षा कवच पत्नी उसे हौसला, मजबूती व सम्मान से खड़े रहने, किसी भी परिस्थिति में न झुकने को कहती है। 'रंभाती गाय' लघुकथा में उन सभी लाखों स्त्रियों की आवाज को उठाया है जो वर्षों से अपनी सास एवं ससुराल वालों से मातृत्व धारण न करने के कारण प्रताड़ना झेल रही हैं। बेरोजगारी का दंश झेलती लघुकथा 'पेट का जुगाड़' एवं 'पहला उम्मीदवार' बहुचर्चित रही।

'सरस्वती पुत्र लघुकथा में स्वाभिमानी युवा लेखक की कथा है जिसमें जीविका चलाने के लिए अत्यन्त आवश्यकता होने पर भी वह शर्तों पर नौकरी करने को तैयार नही होता है। ये सभी लघुकथाएँ अलग-अलग विषयों को लेकर लिखी गई। इनका शिल्प एवं संवाद बेहद कसावट लिए हुए है।

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र

लघुकथा लेखिका मिथिलेश कुमारी मिश्र का जन्म 1 दिसम्बर, 1953, ग्राम-खद्दीपुर (हरदोई) उत्तर प्रदेश में हुआ था। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के निदेशक पद से सेवानिवृत हुई मिश्र जी ने सन् 1991 से लघुकथा लेखन आरम्भ किया। 'अँधेरे के विरुद्ध' (2000), 'छँटता कोहरा' (2002), 'सन्नाटा बोल उठा' (2016) इनके एकल लघुकथा संग्रह हैं। 'कल के लिए' (2004) सम्पादित लघुकथा संकलन है। वहीं लघुकथा का सौन्दर्यशास्त्र (2003) इनकी सह-सम्पादक पुस्तक है। 'झण्ड़ा', 'माँ', 'मौन का सत्य', 'घुटन', 'अपना-अपना दर्द', 'गलीज मानसिकता', 'निर्णय एवं अपराधी' इनकी अन्य लघुकथाएँ हैं।

"दंगा इतना सरल नहीं होता कि इन्सानियत से लबरेज इन्सान बच जाए। दंगा सबसे पहले इन्सान और इन्सानियत का शिकार करता है। 'बेखौफ' एक प्रतिकात्मक लघुकथा है। पल-पल क्षरित होते रक्त संबंधों पर मिथ्या गर्व करने से बेहतर है कि जीवन में खुशी एवं मधुरता बनाए रखने के लिए (सब कुछ जानते हुए) सम्बन्धों का भ्रम बनाए रखना। वृद्ध मजदूर लेखक की शंका का समाधान करते हुए कहता है "कहीं उन लोगों ने भी मेरे पुत्रों की तरह नजरें फेर ली तो.. आज तो मेरे पास भ्रम की पूँजी शेष है... डरता हूँ कहीं वह भी न लुट जाए।" अपने अक्स के सम्मुख खड़े होकर स्वयं को संवाद करके अन्तः करण द्वारा 'निर्णय' लेने कि कृतित्व का व्यक्तित्व से सीधा सम्बंध होना चाहिए। यानि अन्तःकरण के अनुरूप ही लिखा व किया जाए। कलमकार को जिम्मेदारी का अहसास करवाती रचना है। 'निणर्य'।'[7]

निष्कर्ष

उपर्युक्त सभी लघुकथाकार भले ही आज हमारे बीच उपस्थित नहीं है, किन्तु इनका रचना कौशल, कर्मशीलता, लघुकथा के प्रति समर्पण का भाव इस बात का प्रतीक है कि ये आज भी हमारे बीच उपस्थित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 लघुकथा-सप्तक (तीन) स्मृति-शेष लघुकथाकार (सं.), डॉ. रामकुमार घोटड़, पृष्ठ 28

2 लघुकथा-सप्तक (तीन) स्मृति-शेष लघुकथाकार (सं.), डॉ. रामकुमार घोटड़, पृष्ठ 29

3 लघुकथा-सप्तक (तीन) स्मृति-शेष लघुकथाकार (सं.), डॉ. रामकुमार घोटड़, पृष्ठ 6

4 लघुकथा-सप्तक (तीन) स्मृति-शेष लघुकथाकार (सं.), डॉ. रामकुमार घोटड़, पृष्ठ 57

5 लघुकथा-सप्तक (तीन) स्मृति-शेष लघुकथाकार (सं.), डॉ. रामकुमार घोटड़, पृष्ठ 7

6 लघुकथा-सप्तक (तीन) स्मृति-शेष लघुकथाकार (सं.), डॉ. रामकुमार घोटड़, लेख-आदि पुरुषों का लघुकथा संसार, पृष्ठ 17

7 लघुकथा-सप्तक (तीन) स्मृति-शेष लघुकथाकार (सं.), डॉ. रामकुमार घोटड़, लेख-आदि पुरुषों का लघुकथा संसार, पृष्ठ 19